तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में सामाजिक यथार्थ

डॉ. सरिता, सहायक प्राध्यापक,

श्याम लाल कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय

साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक हैं फिर चाहे वो भारतीय समाज हो या अपनाये हुए देश का समाज। प्रवासी भारतीयों की सोच भारत में हो रही गतिविधियों से भी संचालित होती है, और यह संचालित सोच प्रवासी लेखन में बखूबी दिखाई देती है। एक नयेपन का बोध हमें इस साहित्य में देखने को मिलता है। तेजेन्द्र शर्मा प्रवासी साहित्य में एक जाना माना नाम है। तेजेन्द्र शर्मा द्वारा लिखी गई कहानियाँ वास्तव में आम आदमी की बेचैनी और छटपटाहट को व्यक्त करने वाली कहानियाँ हैं। माहौल के अनुसार गढ़े गये चरित्र, उनकी सोच और भाषा वास्तव में व्यक्ति को सोचने और विचारने के लिए मजबूर कर देती हैं। उक्त संकलन में तेजेन्द्र शर्मा की कहानियाँ इसी भावबोध को उजागर करती हैं।

'किराये की कोख' कहानी में सेरोगेट मदर की थीम को केन्द्र में रखकर लिखी गई कहानी है। ब्रिटेन में अठारह वर्ष से छोटी लड़की सिग्रेट नहीं खरीद सकती मगर बिना विवाह किए माँ बन सकती है। इसलिए ब्रिटेन में सिंगल मदर की विकराल होती समस्या को कैसे एकाकीपन और अलगाव के मोड़ पर लाकर खड़ा कर देती है। यहाँ चारों ओर सन्नाटे भरी चीखती दीवारों के सिवा कुछ भी नहीं–'देखो मैनी मैं आज तक तुम्हें साफ–साफ कहने से बचती रही कि तुम्हारा दिल टूट जाएगा। जेफ हमारा बेटा है। मेरा और डेविड का। अगर तुम हमारे बच्चों से मिलोगी तो हम लोगों के बीच कांपलीकेशन्स बढ़ेंगे। हम सबके लिए बेहतर यही है कि तुम अपना जीवन जियो और हम अपना जिएं। ठीक है कि हमने अपने बच्चे के लिए तुम्हारी कोख का इस्तेमाल किया है, पर उसका पूरा किराया भी तो दिया है'। यही कारण है कि कहानीकार ने 'किराए की कोख' के स्थान पर 'कोख का किराया' शीर्षक देकर मुद्दे को सही दिशा देने का प्रयास किया है।

प्रवासी साहित्य भाषा द्वन्द्व की ऐसी मनःस्थिति से बाहर नहीं निकल पाता। 'मुझे मार डालोबेटा' कहानी एक ऐसे द्वन्द्व के चारों ओर घूमती है जहाँ वह स्वयं अपने प्रश्नों के उत्तर नहीं ढूंढ पाता। लकवाग्रस्त पिता को मृत्यु देने का निर्णय उसे ऐसी स्थिति में डाल देता है वहाँ वह अपने आप को बिल्कुल ब्लैंक पाता है मगर जब वही पुत्र पिता के रूप में जानकारी पाता है कि उसके होने वाले बच्चे जीवन भर नार्मल जीवन नहीं जी पाएंगे तो वह तुरन्त निर्णय लेता है कि उसे क्या करना है। पुत्र की निर्णय लेने की क्षमता ही उसे एक कटघरे में लाकर खड़ा कर देती है जहाँ वह यह सोचने के लिए मजबूर हों जाता है कि पिता के सम्बन्ध में वह निर्णय लेने में उसने इतनी देर क्यों कर दी। 'मेरे दिमाग में हर समय बाऊ जी के कहे शब्द बजते रहते हैं। 'मुझे मार डाल बेटा! अब और नहीं सहा जाता'। .... कभी मुझे महसूस होता है कि मैंने बाऊ जी के चेहरे पर तकिया रखकर दम घोंट दिया है, तो कभी उन्हें मुक्ति दिलवाने के लिए बेहिसाब नींद की गोलियाँ खिला देता हूँ। मुझे समझ ही नहीं आता कि मैं क्या करूं'!

रिश्तों और समस्याओं की तर्कसम्मत प्रस्तुति के लिए कहानीकार ने विदेशों में रह रहे भारतीयों खासकर महिलाओं की दशा का चित्रण किया है। भारतीय संस्कार और विदेशी वातावरण में तालमेल बैठाना उनके लिए कठिन होता है, इसकी मिसाल इनकी कहानी 'जमीन भुरभुरी क्यों है' कहानी है। जिसमें पति के अवैध सम्बन्धों और उसके द्वारा किए गये गबन के कारण पत्नी समाज मे आँख भी नहीं उठा पाती। घर परिवार की सारी जिम्मेदारी पूरी करते करते वह समय से पहले बूढ़ी हो जाती है। और वहीं ब्रिटेन की जेल में एक अनुशासित जीवन जीने वाला उसका पति करीब पाँच वर्ष युवा बन लौटता है।

आज के प्रवास में एक द्वन्द्व की स्थिति है। मान्यताएँ टकराती हैं और निजी संघर्ष पैदा होते हैं। इन्ही टकराहटों और निजी संघर्षों का प्रवासी साहित्य अधिक है। निजी संघर्षों से बाहर आकर प्रवास की स्थितियों में वहाँ के जीवन में झाँकने का प्रयास है। 'देह की कीमत' में अपने पति हरदीप को, जिसके साथ पत्नी ने सिर्फ 4–5 माह ही व्यतीत किए थे, जिसे वह विदेशी धरती जापान में खो चुकी है, उसके दुखों और भविष्य की परवाह न करते हुए ,बीजी (सास) ऐसे क्षणों में भी व्यावहारिक फायदे नहीं

भूलती। बेटे की मौत के बाद मित्रों द्वारा भेजे गए चंदे के पैसे बहू को न मिल पाये, बल्कि घर में ही रहें, यह सोचकर वह अपने दूसरे बेटे से विधवा बहू पर चादर ओढ़ाने की बात करती है। औरत के ऐसे स्वार्थी चेहरे को तेजेन्द्र ने बड़ी कुशलता के साथ उकेरा है।'काला सागर' एक ऐसी कहानी है जिसमें मानवीय रिश्ते, संवेदना, भाव सब खत्म हो गये हैं और केवल पैसा ही आदमी के लिए सब कुछ है। न्यूयार्क फ्लाईट के क्रैश हो जाने के पर सगे संबंधियों की लाशों की शिनाख्त करने के आए लोग भावनाविहीन होकर अपना अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे हैं। मानव इतना भी स्वार्थी भी हो सकता है, यही इस कहानी का मूल है।

'कैंसर' कहानी में लेखक समाज में फैले उस कैंसर से लड़ने का प्रयास करता है जो अन्धविश्वास के रूप में समाज में व्याप्त है। पूनम का डॉक्टर उसके कैंसर का इलाज तो विज्ञान द्वारा विकसित दवाइयों से करता था मगर कहता था सब भगवान के हाथ में है। कहीं कोई ताबीज वाला तो कोई सिर हिलाने वाली देवी के पास जाने को कहता था। परन्तु पूनम की आँखों में एक सवाल था कि अन्धविश्वास के जिस कैंसर ने समाज को चारों ओर से जकड़ रखा है क्या उस कैंसर का भी कोई ईलाज है ?

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियाँ अपने विषय की दृष्टि से ही महत्व नहीं रखती बल्कि भाषा की दृष्टि से भी अपने कथ्य को कहने में पूरी तरह सक्षम हैं। शर्मा जी अपनी कहानियों में सामान्य भाषा का इस्तेमाल करते हैं। यह भाषा का रूप पात्रों के स्वभाव के अनुरूप होता है। कहानी अक्सर ऐसी भाषा की ही माँग करती हैं यदि वह किसी ऐतिहासिक कालखण्ड का हिस्सा न हो। तेजेन्द्र शर्मा के पात्र जीवन के यथार्थ का चित्रांकन करते हैं इसलिए भाषा में आलंकारिकता का समावेश नहीं हो पाया है। संग्रह की लगभग सभी कहानियाँ में सामान्य और बोलचाल के शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। इन कहानियों में भारतीय और यूरोपीय संस्कृति का जीवन दर्शाया गया है जिससे साफ जाहिर है अधिकतर भाषा की संरचना में सामान्य और देशज रूपों का प्रयोग अवश्यम्भावी हो जाता है।

तेजेन्द्र शर्मा ने अपने भाषायी प्रयोग में बौद्धिकता को हावी नहीं होने दिया है। यदि ऐसा होता तो कहानी विश्लेषणपरक हो जाती और वह सामान्य पाठक से दूर चली जाती। साधारण अर्थबोध का आग्रह लिए हुए ये कहानियाँ अपनी संरचना की नैतिकता और आदर्श को बनाए रखने में सफल रही हैं।

कई जगह अपनी कहानियों में तेजेन्द्र शर्मा अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग करते हैं परन्तु ये दुरूह नहीं हैं। ये सारे शब्द हमारी हिन्दी की बोलचाल की भाषा में व्याहारिक रूप से इस्तेमाल होते हैं। चूंकि कहानीकार का प्रारम्भिक जीवन भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा रहा है इस तरह से ऐसे शब्दों का प्रयोग स्वाभाविक है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि कहानीकार ने जिन सामाजिक विषयों का चयन अपनी कहानी में किया है उसे आम आदमी के जीवन से प्रतिबद्ध करने में तेजेन्द्र शर्मा सफल रहे हैं। विषय और भाषा की सुदृढ़ता ने इसे और अधिक विशिष्ट बना दिया है। कहानी संस्कृति के तुलनात्मक रूप को पाठक के बीच में छोड़कर आगे बढ़ती हैं, यही कथ्य की सामाजिक प्रतिबद्धता है।

....